प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012

विषय – सामान्य हिन्दी

कक्षा – दसवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उनके सामने अंकित है।
3. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 x 5 x 5 = 25 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 6 से 15 तक में प्रत्येक का उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 16 से 20 तक में प्रत्येक का उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्र. 21 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. उचित शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अंजन कहा................जेहि फूटै बहुतक कहौं लौ।

   (आंख/कांखि)

2. तुलसी के पिता का नाम............था।

   (आत्माराम दुबे/दीनानाथ दुबे)

3. सांस्कृतिक कार्य.............की तरह फलदायी होते है।

   (बरगद वृक्ष/कल्प वृक्ष)

4. मेरी जीवन रेखा पाठ के लेखक...................है।

(महावीर प्रसाद द्विवेदी/सरदार पूर्ण सिंह)

5. 'बरसा' शब्द का तत्सम रूप..................है।

(वर्षा/बरखा)

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए –

(1) मीरा बाई ने प्राप्त किया –

(अ) कृष्ण रतन (ब) राम रतन

(स) विष्णु रतन (द) ब्रम्हा रतन

(2) कर्मवीर पाठ के रचयिता है –

(अ) अयोध्या सिंह उपाध्याय हरि औध (ब) रमानाथ अवस्थी

(स) राम नरेश त्रिपाठी (द) तुलसीदास

(3) कलिंग की महारानी है –

(अ) अमिता (ब) सविता

(स) कविता (द) नमिता

(4) ''हंसिए और स्वस्थ्य रहिए' नामक पाठ के लेखक है –

(अ) विश्वनाथ अय्यर (ब) श्रीराम शर्मा आचार्य

(स) यशपाल (द) डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

(5) कमल का एक पर्यायवाची यह भी है –

(अ) पंकज (ब) दिवाकर

(स) मयंक (द) दिनकर

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों में से सत्य/असत्य का चयन कीजिए –

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी सरस्वती पत्रिका के संपादक थे।
2. पाषाण का तद्भव रूप पत्थर नहीं है।
3. अपराजेय उसे कहते है जिसे जीता न जा सके।
4. सूखी डाली एकांकी में दादा मूलराज की भूमिका प्रमुख थी।

5. स्नेह एक तत्सम शब्द है।

प्रश्न 4. स्तभ 'क' से 'ख' का मिलान कर सही जोड़ी बनाइए –

	क	–	ख
(1)	मजदूरी और प्रेम	–	डॉ. प्रेम भारती
(2)	माटी वाली	–	दिवाकर वर्मा
(3)	तुम वही दीपक बनोगे	–	राम नरेश त्रिपाठी
(4)	वह देश कौन सा है	–	विद्यासागर नौटियाल
(5)	शबरी	–	सरदार पूर्ण सिंह

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :–

1. शबरी की कुटिया में अतिथि बनकर आया?
2. दो वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है उसे क्या कहते है?
3. विद्यालय में कौन सी संधि है?
4. अरविन्द कौन थे?
5. हिम+आलय में कौन सी संधि है?

प्रश्न 6. कर्मवीर कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

अथवा

कवि प्रतिपल सजग रहने की सलाह क्यों देता है?

प्रश्न 7. नदी की धार और ठंडी हवा से क्या आशय है?

अथवा

कवि ने भारत देश की कौन–कौन सी विशेषताएं बतलायी है।

प्रश्न 8. तुलसीदास के काव्य की चार विशेषताएं लिखिए।

अथवा

आदमी की पीर की तुलना कवि ने किस–किस से की है?

प्रश्न 9. 'संस्कृति' से लेखक का क्या आशय है?

अथवा

महावीर प्रसाद द्विवेदी की भाषाशैली की प्रमुख तीन विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 10. अमिता के किस उत्तर ने अशोक का ह्रदय परिवर्तित कर दिया?

अथवा

सादा जीवन उच्च विचार का आशय समझाइए।

प्रश्न 11. माटी वाली का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

पृथ्वी और नारी को क्षमाशील क्यों कहा गया है?

प्रश्न 12. निम्नलिखित मुहावरों/लेकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (कोई चार)

1. कसौटी पर कसना।
2. फूलना–फलना।
3. गगन के तारे तोड़ना।
4. जंगल में मंगल।
5. ईद का चांद होना।

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं चार के पर्यायवाची लिखिए।

1. सूर्य
2. चन्द्रमा

3. भूमि

4. आकाश

5. जल

6. माता

प्रश्न 13. (अ) निम्नलिखित पदों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

(1) पीताम्बर

(2) राष्ट्रपति

(3) दसमुख

(4) माता–पिता

(ब) निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए। (कोई दो)

कवी, सृष्टी, कल्यान, सौंदर्यता।

अथवा

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक शब्द लिखिए।

(1) जिसका कोई शत्रु न हो।

(2) जिस पर विश्वास न किया जा सके।

(ब) निम्न वाक्यों को शुद्ध कर लिखिए।

(1) दशरथ को चार पुत्र थे।

(2) मैंने सुंदर साड़ी पहना।

प्रश्न 14. (अ) निम्न पदों में पहचानकर विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

(1) प्रतिदिन

(2) पंचवटी

(ब) तत्सम शब्द और तद्भव शब्द की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 15. गद्य की विधाओं के नाम लिखिए और काई दो गद्य की विधाओं का सामान्य परिचय दीजिए।

प्रश्न 16. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की संदर्भ–प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

मन–मोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग सा जहां है, वह देश कौन सा है।
जिसका चरण निंरतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन सा है?

अथवा

अब लौं नसानी अब न नसैहों।
रामकृपा भव निसा सियनी जागे पुनि न डसै हों।।
पापो नाम चारन चिंतामनि, उरकर लेन खसैहो।
स्याम रूप सुचि रूचिर कसौटी, चित कंचनहि कसैहों।।
परबस जानि हंस्यो इन इन्द्रिन निजबस कन हसैंहों।
मन मधुकर पन कर तुलसी रघुपति पदकमल बसैहों।।

प्रश्न 17. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ–प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

संशोधन द्वारा लेखों की भाषा अधिक संख्यक पाठकों की समझ में आने लायक कर देता। यह न देखता कि यह शब्द अरबी का है या फारसी का या तुर्की का। देखना सिर्फ यह है कि इस शब्द वाक्य या लेख का आशय अधिकांश पाठक समझ लेंगे या नहीं। अल्पज्ञ होकर भी किसी पर अपनी विद्वता की झूठी छाप छापने की कोशिश मैंने कभी नहीं की।

अथवा

महानता भी बेटा, किसी से मनवायी नहीं जा सकती। अपने व्यवहार से अनुभव करायी जा सकती है। वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में

वह ऐसे पत्ते नहीं लाता जिनकी शीतल सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी–भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं प्रेमीमाला में बिंधकारी को ललचाऊं।।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढै भाग्य पर इठलाऊ।।

प्रश्न 1. अपठित पद्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्रश्न 2. अपठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

प्रश्न 19. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

यह सच है कि विज्ञान ने मानव के लिए भौतिक सुख का द्वार खोल दिया है, किंतु यह भी उतना ही सच है कि उसने मनुष्य की मनुष्यता छीन ली है। भौतिक सुखों के लोभ में मनुष्य यंत्र की भांति क्रियारत है, उसकी मानवीय भावनाओं का लोप हो रहा है और वह स्पर्धा के नाम पर ईर्ष्या और द्वेष से ग्रसित होकर स्वप्नों का ही गला काट रहा है, इसी का परिणाम है अशांति। मनुष्यता को दांव पर हारकर भौतिक सुख का बढ़ना अशुभ है।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्य खण्ड का शीर्षक लिखिए।

प्रश्न 2. उपर्युक्त गद्य खण्ड का स्वयश लगभग 25 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 20. अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के विषय में जानकारी देते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

अथवा

विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु अपने विद्यालय के प्राचार्य को आवेदन पत्र लिखिए।

प्रश्न 21. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 से 300 शब्दों में निबंध लिखिए।

1. किसी त्यौहार का वर्णन।
2. विज्ञान के बढ़ते कदम।
3. दहेज प्रथा।
4. किसी पर्यटन स्थल का वर्णन।
5. खेलों का महत्व।

_ _ _ _ _ _

<u>आदर्श उत्तर</u>

विषय – सामान्य हिन्दी

कक्षा – दसवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति –

1. आँखि।
2. आत्माराम दुबे।
3. कल्पवृक्ष।
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी।
5. वर्षा।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन –

1. रामरतन।
2. अधोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध''
3. अमिता।
4. श्रीराम शर्मा आचार्य।
5. पंकज।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सत्य/असत्य का चयन –

(1) सत्य।

(2) असत्य।

(3) सत्य।

(4) सत्य।

(5) सत्य।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सही जोडियां बनाना –

	क	–	ख
(1)	मजदूरी और प्रेम	–	सरदार पूर्ण सिंह
(2)	माटी वाली	–	विद्यासागर नौटियाल
(3)	तुम वही दीपक बनोगे	–	दिवाकर वर्मा
(4)	वह देश कौन सा है	–	राम नरेश त्रिपाठी
(5)	शबरी	–	डॉ. प्रेम भारती

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर –

1. शबरी की कुटिया में अतिथि बनकर राम आया।
2. दो वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है उसे संधि कहते है।
3. विद्यालय में स्वर संधि है।
4. अरविन्द योगी महापुरूष थे।
5. हिम+आलय में स्वर संधि है।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. कर्मवीर कविता एक भाव–प्रधान कविता है। इससे प्रेरणा मिलती है कि हमें कभी भी कठिनाईयों व विपत्तियों से नहीं घबराना चाहिए। हमें भाग्यवादी न बनकर कर्मों की ओर ध्यान देना चाहिए।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कवि ने मनुष्य को अपने जीवन में प्रतिपल सजग रहने की आवश्यकता बतलायी है। जो सजग नहीं रहते वे कभी भी धोखा खाते है और उन्हें सजगता से न रहने के कारण पछताना पड़ता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. नदी की धार और ठंडी हवा से आशय है– जीवन में उतार चढ़ाव दुःख सुख कठोरता सरसता आदि से है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कवि ने भारत की निम्नलिखित विशेषताएं बतलाई है –

1. भारत देश में सुख स्वर्ग के समान है।
2. भारत देश की नदियों में अमृत धारा प्रवाहित हो रही है।
3. भारत में अपार धन संपदा है।
4. भारतवर्ष ने विश्व भर के लोगों को सबसे पहले ज्ञान दिया है।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. तुलसीदास जी की विशेषता–

1. लोक कल्याण की भावना।
2. सामाजिक समरसता।
3. सगुण भक्ति काव्य धारा।
4. श्रंगार व वात्सल्य का प्रभावपूर्ण चित्रण।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। अथवा

आदमी की पीर की तुलना कवि ने जर्जर नाव से भीगी हुई बाती से, खंडहर के ह्रदय से जंगली फूल से निर्वचन मैदान में लेटी हुई नदी से और अनुपलब्धियों से की है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. संस्कृति से लेखक का आशय है जीवन जीने का ढंग। मनुष्य जिस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करता है उसकी संस्कृति से जुड़ा है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

द्विवेदी जी लेखों की भाषा में संशोधन करके उसे अधिक सेअधिक पाठकों के पढ़ने योग्य बना देते थे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. अच्छा तुम मांगते हो तो ले जाओ। क्या तुम्हारे पास सिंहासन नहीं है? अच्छा तुम इसे ले जाओ, हम दूसरा ले लेंगे। अमिता के इस उत्तर ने अशोक का ह्रदय परिवर्तित कर दिया।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

मनुष्य को हमेशा अपने विचारों और आचरण को शुद्ध, सरल, सात्विक रखना चाहिए। तभी वह महान बन सकता है और उसकी विशिष्ट पहचान बन सकती है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. माटी वाली का चरित्र चित्रण –

1. माटी वाली एक सह्रदय महिला थी।

2. उसके पास अच्छे बुरे भाग्य के बारे में सोचने का समय नहीं था।

3. माटी वाली अकेले रहने का कष्ट जानती थी।

4. माटी वाली का दैनिक जीवन संघर्षपूर्ण था।

5. माटी वाली विस्थापित श्रमजीवी महिला थी।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

पृथ्वी और नारी दोनों ही क्षमाशील होती है। क्योंकि जिस तरह पृथ्वी मनुष्यों को इतना सब कुछ देती है तो भी मनुष्य पृथ्वी का कृतज्ञ नहीं होता। इसी तरह नारी त्याग और संघर्ष की प्रतिमूर्ति है। वह दूसरों की गलतियों को विनम्रतापूर्वक क्षमा कर देती है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. मुहावरें–

1. कसौटी पर कसना – खरा उतरना।

   प्रयोग– सोने को सुनार कसौटी पर कसते है।

2. फूलना–फलना – खुश रहना।

   प्रयोग– रमेश का परिवार खूब फूल फल रहा है।

3. गगन के तारे तोड़ना – कठिन कार्य को करना।

   प्रयोग– सोनू ने हाईस्कूल में मेरिट स्थान पाकर तारे तोड़ने का कर्य किया है।

4. जंगल में मंगल – हर जगह खुश रहना।

   प्रयोग– श्याम तो कहीं भी जाकर जंगल में मंगल मना लेता है।

5. ईद का चांद होना – बहुत दिनों बाद मिलना।

   प्रयोग– अभिषेक ने मोहन से कहा यार तुम तो ईद के चांद हो गए हो।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

पर्यायवाची शब्द –

1. सूर्य – दिनकर, भास्कर, दिवाकर, रवि।

2. चन्द्रमा – चन्द्र, चांद, मयंक, शशि।

3. भूमि – वसुन्धरा, भू, धरा, पृथ्वी।

4. आकाश – गगन, अंबर, अंतरिक्ष।

5. जल – पानी, नीर, वारि, सलिल।

6. माता – मां, जननी, जन्मदात्री।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. (अ) समास विग्रह –

1. पीत–अम्बर = पीताम्बर – बहुब्रीहि समास।
2. राष्ट्र+पति = राष्ट्रपति – तत्पुरूष समास।
3. दस+मुख = दसमुख वाला रावण – बहुब्रीहि समास।
4. माता+पिता = माता और पिता – द्वन्द समास

(ब) शुद्ध रूप –

1. कवि।
2. सृष्टि।
3. कल्याण।
4. सौंदर्य।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4)

अथवा

(अ) एक वाक्य –

1. अजातशत्रु।
2. अविश्वसनीय।

(ब) शुद्ध वाक्य–

1. दशरथ के चार पुत्र थे।
2. मैंने सुंदर साड़ी पहनी।

3- उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4)

उत्तर 14. (अ) समास विग्रह–

1. प्रति+दिन = प्रतिदिन – अव्यवीभाव समास।
2. पंच+वटी = पंचवटी – द्विगु समास।

(ब) तत्सम शब्द – वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में आकार ज्यो के त्यों उपयोग होते है।

तद्भव शब्द – वे शब्द जो परिवर्तन के बाद उपयोग में आ रहे है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4)

उत्तर 15. गद्य की विधाएं –

निबंध, कहानी, उपन्यास, डायरी, पत्र–लेखन, एकांकी, नाटक, माया–वृत्त आदि।

निबंध– किसी भी विषय पर स्वछन्द रूप से क्रमबद्ध रूप से पूर्ण रूप में वर्णन निबंध होता है।

एकांकी – एक घटना या एक पक्ष का सारगर्भित वर्णन।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4)

उत्तर 16. पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत पद्यांश पाठ्य पुस्तक हिन्दी सामान्य में संकलित ''वह देश कौन सा है?'' पाठ से लिया गया है। इसके कवि श्रीराम नरेश त्रिपाठी है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियों में भारतवर्ष की सुंदरता और मनमोहक घटा का वर्णन है।

व्याख्या :– जो मनमोहक प्रकृति की गोद में विराजमान है। जहां स्वर्ग के समान सुख फैला हुआ है, वह देश कौन सा है, अर्थात वह देश भारत ही है। जिसका चरण हमेशा समुद्र धोता रहता है और जिसका मुकुट हिमालय है वह देश कौन सा है अर्थात वह देश भारत ही है। जहां नदियां अमृत की धारा बहा रही है और जिसका सलोना सींचा हुआ है वह देश कौन सा है अर्थात वह देश भारत ही है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भ:– प्रस्तुत पद सामान्य हिन्दी के विनय के पद नामक पाठ से उद्धृत है। इसके रचयिता तुलसीदास है।

प्रसंग :– तुलसीदास ने भगवान राम के प्रति उनकी कृपा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की है और उन्हें अपनी भक्ति भावना समर्पित की है।

व्याख्या :– तुलसीदास जी कहते है कि अभी तक की सारी आयु यो ही व्यर्थ निकल गई। अब समझ आ गया है जब मैं जाग चुका हूँ। अब माया मोह के फंदे में नही आउंगा। मुझे तो राम नाम रूपी चिंतामणि मिल गई है। अब तो मैं उसे कसौटी की तरह कसूंगा। इन्द्रियों के वश में होने पर बहुत हंसी उड़ाई। अब तो मैं भगवान राम के श्रीचरणों में अपने मन को लगा दूंगा।

विशेष :–

1. भक्ति भाव का प्रभाव।
2. शांत रस, एवं अवधी भाषा।
3. उपमा, रूपक और अनुप्रास का प्रयोग।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 17. गद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक सामान्य हिन्दी के पाठ मेरी जीवन रेखा से उद्धृत है। इसके लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी है।

प्रसंग :– महावीर प्रसाद द्विवेदी लेखों में संशोधन कर पाठकों का विशेष ध्यान रखते थे।

व्याख्या :– द्विवेदी जी सरस्वती परित्रका में लेखों को प्रकाशित करने से पूर्व उनमें संशोधन कर देते थे। वे भाषा को ऐसी बना देते थे कि अधिक से अधिक पाठकों को समझ में आ जाए। इसके लिए वे फारसी, ऊर्दू और अरबी भाषा के शब्दों का प्रयोग करने में भी संकोच नहीं करते थे। उन्होंने अपने को अल्पज्ञ मानते हुए विद्वता का प्रीााव डालने का प्रयत्न नहीं किया।

विशेष :–

4. भाषा में प्रवाह।
5. प्रस्तुत गद्यांश ज्ञानवर्द्धक है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

गद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य पुस्तक सामान्य हिन्दी के पाठ सूखी डाली (एकांक) से उद्धृत है। इसके एकांकीकार श्री उपेन्द्र नाथ अश्क है।

प्रसंगः– प्रस्तुत गद्यांश में एकांकीकार ने कर्मचंद के प्रति दादा मूलराज के कथन को व्यक्त किया है। दादा समझते हुए कहते है।

व्याख्याः– बेटा! कर्मचंद! अपने बड़प्पन को किसी के ऊपर थोपा नहीं जा सकता।इसके तो अपने सद्व्यवहार से ही दूसरों पर रखा जा सकता है। इसे हम यों समझ सकते है कि कोई बड़ा पेड़ आकाश को छू भले ही ले, लेकिन वह अपनी इस महानता और बड़प्पन का अहसास हमें तब तक नहीं करा सकता है जब तक अपनी डालियों और पत्तों की शीतल, सुखद, रोचक और

मोहक छाया से हमारे तन मन के ताप को दूर न कर दे। अपनी सुगंध भरी फलों की छुवन से हमें आनंदित न कर दे।

विशेषः—

1. गद्यांश उपदेशात्मक है।
2. भाषा प्रभाव पूर्ण है।

(संदर्भ—1, प्रसंग—1, व्याख्या—2, विशेष—1 कुल 5 अंक)

उत्तर 18. अपठित पद्यांश के उत्तर —

उत्तर 1. शीर्षक — पुष्प की अभिलाषा।

उत्तर 2. भावार्थ— पुष्प कहता है कि मैं देव कन्या के आभूषणों में सजना नहीं चाहता और न ही किसी प्रेमी की माला का पुष्प बनकर प्रेमिका को रिझाना नहीं चाहता और न ही मैं चाहता हूँ कि सम्राटों के शव पर चढ़कर अपना भाग्य श्रेष्ठ बतलाऊं और मेरी यह चाहत भी नहीं कि देवों के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य को माहन समझूं।

5 अंक

उत्तर 19. अपठित पद्यांश के उत्तर :—

उत्तर 1. शीर्षक — विज्ञान एक अभिशाप।

उत्तर 2. सारांश — विज्ञान ने मानव को सुख के बहुत से साधन दिए हैं, किंतु उसके कारण मनुष्य की मनुष्यता भी छिन गई है। आज मनुष्य अपने ही भाईयों का विनाश कर रहा है। इसी कारण सर्वत्र अशांति फैली है।

5 अंक

उत्तर 20.

<u>पत्र</u>

पूज्यनीय पिता जी,

सादर चरणस्पर्श

दिनांक 21.10.2011

मैं यहां कुशलापूर्वक हूँ। आप भी परिवार के साथ सकुशल होंगे। मेरी पढ़ाई ठीक चल रही है। मैं वार्षिक परीक्षा की तैयारी पूरी मेहनत लगन से कर रहा हूँ। मैं इस बार प्रावीण्य सूची में अवश्य ही आऊंगा।

आदरणीय माताजी को चरण स्पर्श प्रिय गोलू और रोजी को प्यार स्नेह।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

प्रवीण मुखर्जी

5 अंक

अथवा

सेवा में,

प्राचार्य महोदय,

चौइथराम फाउण्टेन हा.से. स्कूल,

श्रीराम तलावली धार रोड़, इन्दौर

विषय :— शाला त्याग प्रमाण पत्र प्रदान किए जाने के संबंध में।

मान्यवर,

विनम्र निवेदन है कि मेरे पिता जी का स्थानांतरण भोपाल हो गया है। इसलिए मैं अब इन्दौर के स्थान पर भोपाल में अध्ययन करूंगा।

अतः निवेदन है कि मुझे शाला त्याग प्रमाण पत्र प्रदान करने का कष्ट करें।

आपकी आज्ञाकारी शिष्य

मुकेश यादव

कक्षा–X

5 अंक

उत्तर 21. **निबंध लेखन –**

दहेज प्रथा

1. प्रस्तावना।
2. दहेज का अर्थ।
3. दहेज की परम्परा।
4. दहेज प्रथा के कारण।
5. दहेज उन्मूलन में युवाओं की भूमिका।
6. दहेज की व्यथा कथा।
7. उपसंहार।

प्रस्तावना :– आज दहेज की समस्या इतनी विकराल बन चुकी है जिसके कारण महिलाओं का जीवन नाटकीय रूप ले चुका है। दहेज प्रथा भारतीय समाज का एक अभिशाप जैसा है। आज मनोकूल दहेज न मिलने के कारण नव वधुओं को प्रताड़ित किया जाता है। साथ ही उन्हें मृत्यु द्वार तक पहुंचाने में भी संकोच नहीं किया जाता।

दहेज का अर्थ :– दहेज का एक सकारात्मक स्वरूप था। प्राचीन काल में भी यह प्रथा थी किन्तु उस समय यह प्रथा एक अभिशाप न थी। माता–पिता स्नेह वश दाम्पत्य जीवन के लिए आवश्यक सामग्री धन, वस्त्र, आभूषण आदि स्वेच्छानुसार देते थे। यह दहेज किसी दबाव की भावना से नहीं दिया जाता था।

दहेज की परम्परा :– आज भी यह परम्परा निरंतर चली आ रही है। पैसे वाले बढ़चढ़कर दहेज देते है। वे विवाह के अवसर पर अपना वैभवपूर्ण प्रदर्शन करने के लिए अधिक से अधिक दहेज देते है। आज दहेज का स्वरूप बदल चुका है इसे वर मूल्य कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

दहेज प्रथा के कारण :– दहेज के पीछे एक कारण है। सामाजिक व्यवस्था और आड़म्बर प्रदर्शन। जिनके पास अधिक धन है वे दहेज को निरंतर बढ़ावा दे रहेहै। इसे आज समाज की एक बड़ी कुरीति माना जा सकता है।

दहेज उन्मूलन में युवाओं की भूमिका – दहेज उन्मूलन में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। आज जब बराबरी से स्त्री पुरूष दोनों ही उच्च शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करके उच्च पदों पर आसीन है। उन्हें किसी बात की कमी नहीं है। ऐसे में उन्हें चाहिए कि वे दहेज प्रथा का प्रबल विरोध करें और अपने अभिभावकों को दहेज लेने व देने दोनों से ही रोके। वे माता–पिता को हर प्रकार से समझाये।

दहेज की व्यथा–कथा :– आज कम दहेज के चक्कर में रोजाना की मारपीट स्त्रियों के साथ होती है। सास, ससुर, ननद, देवरानी और जिठानी जैसे गरिमामयी रिश्ते अपनी मर्यादा भूलकर अपनी घर की लक्ष्मी यानि वधू को जिन्दा जला देते हैं। कभी–कभी दहेज के कारण सैंकड़ों लाखों नवयुवतियां अविविाहित रह जाती है। कभी–कभी कुंठा एवं घुटने समाज के कारण युवतियां आत्म हत्या तक कर लेती है।

उपसंहार :– हमें दहेज के विरोध में पूरे जोश और उत्साह से जुट जाना चाहिए। समाज सुधारकों, शिक्षाशास्त्रिों, कवियों, उपन्यासकारों तथा फिल्म निर्माताओं को भी दहेज प्रथा के विरोध के लिए अपने–अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए।

प्रस्तुतिकरण 2 अंक, विषयवस्तु 4 अंक, भाषाशैली 2 अंक, उपसंहार 2 अंक।

उपरोक्तानुसार लिखने पर पूर्ण 10 अंक 10 अंक प्राप्त होंगे

– – – – –